कहानी – लेखन

कहानी-लेखन की सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसमें कोई न कोई कहानी जरूर होनी चाहिए। कहानी की विशेषता यह है कि उसमें मनुष्य के जीवन से जुड़ी किसी घटना अथवा कार्य-व्यापार का वर्णन किया जाता है। कहानीकार के पास कहानी लिखने का एक कारण जरूर होता है, जिसे वह अपनी भाषा और शैली के माध्यम से कहानी में व्यक्त करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि कहानी के कुछ निश्चित अंग और तत्त्व होते हैं, जिनके बिना कहानी आकार नहीं ले सकती। ये तत्त्व हैं:

1. कथावस्तु
2. चरित्र-चित्रण
3. देशकाल और वातावरण (परिवेश)
4. संवाद
5. भाषा-शैली
6. उद्देश्य (प्रतिपाद्य)

कथावस्तु: कथावस्तु का मतलब होता है कहानी में प्रस्तुत की गई घटना अथवा कार्य-व्यापार। कहानीकार कथ्य के अनुसार कहानी का गठन करता है, अर्थात उसका आरंभ, विकास और समापन निर्धारित करता है।

चरित्र-चित्रण: इसके लिए कहानीकार कई ढंग अपनाता है। कहानी में जो भी पात्र होते हैं, उनके हाव-भाव और कार्य ही उनका चरित्र निर्माण करते हैं। जैसे, किसी डाकू के हाव-भाव अलग होंगे और मंदिर के पुजारी के अलग।

देशकाल और वातावरण (परिवेश): कहानी में ली गई घटना का संबंध जिस समय और परिस्थितियों से होता है, उसे ही कहानी का परिवेश कहते हैं। जैसे कि अगर कहानी गाँव से संबंधित है, तो उसका परिवेश अलग होगा और यदि शहर से संबंधित है, तो अलग।

संवाद: कहानी के विभिन्न पात्र आपस में जो बातचीत करते हैं, वही संवाद होते हैं। जैसे – राधा ने कहा, 'तुम इतने निष्ठुर क्यों हो?' कृष्ण ने जवाब दिया, 'यह तुम्हारा भ्रम है। मैं तो समस्त जग को समान दृष्टि से प्रेम करता हूँ राधे!'.

भाषा-शैली: कहानी की भाषा उसकी प्राण होती है। एक ही कहानी में उसके गठन के अनुरूप भाषा के कई रूप हो सकते हैं, जिसे हम शैली कहते हैं। भाषा के द्वारा ही कहानीकार अपने पात्रों को सजीव एवं स्वाभाविक बनाता है तथा शैली के द्वारा कहानी को पाठकों के लिए प्रभावी बनाता है।

उद्देश्य (प्रतिपाद्य): उद्देश्य अथवा प्रतिपाद्य का तात्पर्य कहानी के अभिप्राय से है। कहानी का उद्देश्य ही उसे महान बनाता है। प्रतिपाद्य को समझे बगैर किसी भी कहानी को ठीक से नहीं समझा जा सकता।

कहानी लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें :

1. **रूपरेखा**

   कहानी लिखने के पहले पूरी रूपरेखा सावधानी से दो-तीन बार पढ़नी चाहिए, क्योंकि रूपरेखा के आधार पर ही कहानी लिखने के लिए कहा जाता है। विद्यार्थी को तय कर लेना चाहिए कि वह अपनी ओर से कहाँ और कितना रंग भर सकता है। कल्पना का कितना उपयोग कर सकता है। उसे किस संकेत का कितना विस्तार करना है।

2. कहानी के प्रत्येक संकेत पर केवल एक-एक वाक्य लिखने से ही कहानी नहीं बनती। वर्णन, विस्तार और वार्तालाप की त्रिवेणी कहानी में नया रंग भर देती है।

   वर्णन : कहानी में घटना, पात्र या दृश्य का यथोचित वर्णन करना चाहिए।

   विस्तार : कहानी न अधिक छोटी होनी चाहिए और न अधिक लंबी। आवश्यकतानुसार कहानी में स्थान, पात्र आदि के नाम देने चाहिए।

वार्तालाप : कहानी में पात्रों के बीच वार्तालाप या संवाद होने चाहिए। वे बड़े स्वाभाविक होने चाहिए। संवाद छोटे और स्पष्ट हों। उनसे पात्रों के चरित्र की विशेषता प्रकट होनी चाहिए।

3. कहानी के विचारों में प्रवाह एवं एकसूत्रता होनी चाहिए।
4. रूपरेखा में दिए गए किसी संकेत को छोड़ना नहीं चाहिए। इससे संकेतों का पारस्परिक संबंध ठीक से बना रहता है और कहानी स्वाभाविक लगती है।
5. रूपरेखा के संकेतों को क्रमशः लेना चाहिए अर्थात उन्हें उलट-पुलट न किया जाए।
6. **परिच्छेदों में विभाजन**

   पूरी कहानी एक ही परिच्छेद में लिखना भूल है। उसमें कम से कम तीन परिच्छेद होने चाहिए। संकेत के महत्त्व के अनुसार परिच्छेद का विस्तार होना चाहिए।
7. **भाषा-शैली**

   कहानी की भाषा-शैली का अपना अलग महत्त्व है। कहानी की भाषा सरल, स्वाभाविक और प्रवाहमयी होनी चाहिए।

8 व्याकरण की दृष्टि से भाषा शुद्ध होनी चाहिए।

9. वर्णविन्यास और विरामचिह्नों की ओर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए।

10. मुहावरों और कहावतों का यथास्थान प्रयोग कहानी में जान डाल देता है।

11. **प्रारंभ और अंत**

कहानी का प्रारंभ और अंत दोनों संक्षिप्त, रोचक और भावपूर्ण होने चाहिए।

12. **शीर्षक**

शीर्षक कहानी का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसे कहानी के आरंभ में लिखें। शीर्षक कथावस्तु से संबंधित होना चाहिए।

13. **सीख**

अंत में कहानी से मिलने वाली शिक्षा या सीख, नसीहत या उपदेश अथवा बोध का उल्लेख होना चाहिए। इससे कहानी का तात्पर्य आसानी से समझ में आ जाता है। सीख स्पष्ट और संक्षिप्त होनी चाहिए।

नई परीक्षा पद्धति के अनुसार कहानी-लेखन

नई परीक्षा पद्धति के अनुसार कहानी-लेखन के स्वरूप में भी बदलाव किया गया है। इसके फलस्वरूप कहानी चार प्रकार से पूछी जा सकती है, ये प्रकार निम्नलिखित हैं:

1. कहानी से संबंधित अधिक से अधिक मुद्दे देकर।
2. कहानी से संबंधित कुछ मुख्य मुद्दे देकर।
3. कहानी की शुरुआत की कुछ पंक्तियाँ देकर।
4. कहानी की अंतिम पंक्तियाँ देकर।

नमूना कृतियाँ

1. **खरगोश – कछुए में रेस की शर्त – कछुए की जीत – खरगोश को भूल का एहसास – फिर से रेस – भूल सुधार – खरगोश की जीत**

उत्तर: **खरगोश की कछुए पर जीत**

बहुत वर्षों पुरानी कहानी है, एक घना जंगल था। उसमें अनगिनत प्राणी रहते थे। उस जंगल में एक खरगोश व एक कछुआ भी रहते थे। दोनों की आपस में गहरी मित्रता थी। कछुआ काफी मेहनती व सकारात्मक विचारों वाला था, जबकि खरगोश अपने रूप-रंग और चाल की वजह से थोड़ा घमंडी बन गया था। आपसी प्रेम के साथ दोनों दोस्तों के दिन गुजर रहे थे।

एक दिन किसी बात पर कछुए और खरगोश में एक अनोखी शर्त लग गई। शर्त भी ऐसी की जंगल का जो प्राणी सुनता दाँतों तले ऊँगली दबा लेता। शर्त ऐसी थी कि खरगोश और कछुए को एक निश्चित दिन व निश्चित समय पर एक रेस लगानी थी। इस रेस के अंतर्गत दोनों को उस बड़े से जंगल का एक चक्कर लगाना था। जो यह रेस जीतता वह दोनों में श्रेष्ठ कहलाता। सभी को आश्चर्य इस बात का थी कि आखिर कछुआ इस रेस के लिए तैयार कैसे हो गया। कहाँ कछुए की धीमी चाल और कहाँ पवन वेग से दौड़ने वाला खरगोश। खरगोश भी खुश था, क्योंकि उसे लगा कि उसकी जीत सुनिश्चित है।

दोनों दोस्त सुनिश्चित दिन पर सुनिश्चित स्थान पर पहुँचे। जंगल की इस अनोखी रेस के साक्षी बनने के लिए सभी जानवर इकट्ठा हुए थे। रेस शुरू हुई, कछुआ धीरे-धीरे चल रहा था, जबकि खरगोश कूदते हुए काफी दूर निकल गया। कुछ दूर और जाने के बाद खरगोश ने देखा कि कछुआ अभी काफी दूर है। उसने विचार किया कि क्यों न कुछ देर विश्राम कर रेस को पूरा किया जाए। वह वहीं आराम करने लगा। इस बीच कब उसे गहरी नींद आ गई पता ही नहीं चला। दूसरी ओर कछुआ धीरे-धीरे अपनी रेस पूरी करने में जुटा रहा। जब खरगोश की नींद टूटी, तो वह मंजिल की ओर भागा, लेकिन वहाँ पहुँचकर देखता है कि कछुआ रेस जीत चुका है। वह काफी शर्मिंदा हुआ। उसे एहसास हुआ कि उसके अभिमान ने उसे पराजित किया है। अब शर्मिंदा खरगोश चुपचाप अपने दिन गुजारने लगा।

एक दिन फिर जंगल में कछुए व खरगोश के बीच रेस लगी। इस बार जंगल के दो चक्कर मारने थे। कछुआ अपनी पहली जीत से काफी उत्साहित था, वहीं दूसरी ओर खरगोश अपनी गलतियों से सबक लेकर तैयार था। रेस शुरू हुई। इस बार खरगोश ने कोई भी गलती नहीं की और पूरी रेस खत्म करके ही दम लिया। इस बार खरगोश की जीत हुई और सभी ने उसकी सराहना की।

सीख: आत्मविश्वास अच्छी बात है, लेकिन अति आत्मविश्वास नहीं करना चाहिए।

2. **बूढ़ा किसान – तीन कामचोर बेटे – खजाने का रहस्य ...**

उत्तर: **छुपा हुआ खजाना**

बहुत समय पहले दूर-दराज के क्षेत्र में स्थित एक गाँव में बूढ़ा किसान रहता था। वह किसी तरह खेती का काम कर अपना व अपने तीन कामचोर

बेटों का पेट पालता था। उसकी पत्नी का कई वर्ष पहले ही देहांत हो चुका था। कुछ वर्षों के बाद बुजुर्ग किसान बुरी तरह बीमार हो गया। उसे आभास हो गया था कि उसके जाने का समय आ चुका है, लेकिन उसे इस बात की चिंता भी सता रही थी कि उसकी मृत्यु के पश्चात उसके तीनों कामचोर बेटों का गुजर कैसे होगा? उसके तीनों बच्चे भी पिता की यह हालत देखकर परेशान थे। मरणासन्न अवस्था में बूढ़े किसान को एक युक्ति सूझी। उसने अपने तीनों जवान बेटों को अपने पास बुलाया और खेत में छुपे खजाने का राज बता दिया। बूढ़े किसान ने बताया कि उसने कई वर्षों पूर्व अपने खेत में कहीं पर खूब ढेर सारा खजाना गाड़ा था, लेकिन किस जगह, यह वह भूल गया है। उसने कहा कि उसके मरने के बाद तीनों मिलकर वह खजाना निकाल लें। इस रहस्य को उजागर करने के साथ ही किसान के प्राण पखेरू उड़ गए।

कुछ दिनों बाद तीनों बेटों ने जी-तोड़ मेहनत कर पूरा खेत खोद डाला, लेकिन कहीं कोई खजाना नहीं था। आखिरकार थक-हारकर तीनों घर बैठ गए। उन्हें लगा कि पिता जी शायद कहीं और ही खजाना रखकर भूल गए हैं। सभी निराश थे, इसी बीच गाँव के एक बुजुर्ग व्यक्ति ने तीनों भाइयों को खेत में बुआई करने की सलाह दी। उन तीनों ने सोचा इसमें गलत ही क्या है। तीनों ने मिलकर बुआई कर दी। अच्छी जोताई और समय पर बोआई के बाद उस वर्ष अच्छी वर्षा भी हुई। कुछ ही दिनों में खेतों में फसलें लहलहाने लगीं। तीनों ने कटाई कर खुद के लिए अनाज सुरक्षित रख बाकी बेच दिया। उन्हें खूब मुनाफा हुआ और तब जाकर उन तीनों बच्चों को छुपे हुए खजाने का रहस्य समझ में आया।

सीख: मेहनत ही सच्चा खजाना है और मेहनत करके हम कोई भी मंजिल प्राप्त कर सकते हैं।

3. **जय और विजय दोनों बहुत अच्छे मित्र थे। दोनों एक साथ खेलते-कूदते और स्कूल आते-जाते थे। उनका गाँव जंगल के बगल में था। एक दिन दोनों दोस्तों ने जंगल की सैर करने की ठानी ...**

उत्तर: **सच्चा मित्र**

जय और विजय दोनों बहुत अच्छे मित्र थे । दोनों एक साथ खेलते-कूदते और स्कूल आते-जाते

थे। उनका गाँव जंगल के बगल में था। एक दिन दोनों दोस्तों ने जंगल की सैर करने की ठानी। दोनों घर पर किसी को बताए बिना जंगल की ओर निकल पड़े। उन्होंने सुना था कि जंगल में बहुत सारे जानवर हैं। कुछ जानवर तो मनुष्य के मित्र हैं अथवा वे मनुष्यों को हानि नहीं पहुँचाते, लेकिन कुछ बड़े घातक होते हैं। वे दोनों जंगल में काफी अंदर तक पहुँच गए।

जंगल में जय और विजय ने कई छोटे-बड़े जानवरों जैसे-हिरन, बारासिंघा, सियार आदि को देखा। इसके अलावा रंग-बिरंगे अनेक प्रजातियों के फल-फूल व पंछियों को भी उन्होंने देखा। कुछ देर बाद दोनों को एहसास हुआ कि वे बहुत दूर चले आए हैं, तो उन्होंने घर वापस लौटने का निश्चय किया। जय-विजय घर लौट रहे थे। शाम का वक्त हो चला था। सूर्य देव भी विदा ले रहे थे और पशु-पक्षी जैसे अपने घर को लौट रहे थे।

घर अब भी काफी दूर था। इसी बीच अचानक उन दोनों को सामने से कुछ दूरी पर एक विशालकाय भालू आता दिखा। दोनों सहम गए। डर के मारे विजय फौरन पास के एक पेड़ पर चढ़ गया। जय को पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था, इसलिए वह जमीन पर लेट गया था। वास्तव में इस दौरान पिता जी की सिखाई एक बात उसे याद आ गई। पिता जी ने जय को बताया था कि भालू मृत शरीर को हानि नहीं पहुँचाता, वह सिर्फ जीवित प्राणियों का शिकार करता है। भालू कुछ पलों में जय के पास पहुँचा। उसने पहले जय को सूँघा और फिर उसके शरीर का चक्कर लगाया। विजय पेड़ पर छुपकर बैठे हुए चुपचाप यह सब देख रहा था। थोड़ी देर में फिर भालू जय को सूँघने लगा। भालू को शायद जब यकीन हो गया कि यह मृत शरीर है, तो वह अपने रास्ते चला गया।

कुछ देर बाद जय उठ खड़ा हुआ और उधर विजय भी पेड़ से उतरकर आ गया। विजय ने तब जय से पूछा कि आखिर भालू ने तुम्हारे कान में क्या कहा? इस पर जय ने जवाब दिया कि भालू ने उसके कान में कहा कि जो मित्र बुरे वक्त में काम न आए वह सच्चा मित्र नहीं है। उसका साथ फौरन छोड़ देना चाहिए। उस दिन से जय ने विजय से दोस्ती तोड़ ली और फिर कभी जय ने स्वार्थी विजय को अपना दोस्त नहीं बनाया।

सीखः बुरे वक्त में जो साथ दे वही सच्चा मित्र होता है।

4. **...संन्यासी ने राजा से कहा कि ईश्वर ने जितना हमें दिया है, हमें उसमें ही संतुष्ट रहना चाहिए। लालच व्यक्ति को अंधा बना देती है।**

उत्तर: **लालच बुरी बला**

कलकत्ता में एक समय बहुत ही धनवान व शक्तिशाली राजा का शासन था। उसकी प्रजा भी उससे काफी प्रसन्न थी। राजा अपनी प्रजा का बहुत ध्यान रखता था। राजा की एक बेटी थी, छोटी-सी एकदम परी की तरह सुंदर व प्यारी। राजा उससे बहुत प्यार करता था। राजा में सारी खूबियाँ थीं, बस एक कमी यह थी कि वह अधिक से अधिक धन एकत्रित कर विश्व का सबसे धनवान राजा बनना चाहता था। उसे अपने खजाने को और अधिक बढ़ाने की चिंता हमेशा सताती रहती।

एक दिन उस राज्य में एक चमत्कारी संन्यासी पहुँचा। उसने कई दिनों तक उस राज्य में निवास किया। इस बीच उसने कई ऐसे चमत्कार दिखाएँ, जिसने लोगों को हैरान कर दिया। धीरे-धीरे संन्यासी की ख्याति राजा के कानों तक पहुँची। राजा ने अपने मंत्रीगणों से विचार कर संन्यासी को राजदरबार में उपस्थित होने का संदेश भिजवाया। राजा की आज्ञा का भला कौन उल्लंघन करता, संन्यासी दूसरे दिन समय पर दरबार में पहुँच गया। राजा ने उसे अतिथिगृह में आराम करने व संध्या समय अपने विशेष कक्ष में मिलने का आदेश दिया।

संध्या के वक्त दरबानों के साथ वह संन्यासी राजा के विशेष कक्ष में पहुँचा। राजा वहीं बैठा हुआ था। राजा ने संन्यासी को विश्व का सबसे धनवान राजा बनने की इच्छा बताई और पूछा कि वह क्या कर सकता है? संन्यासी ने इस सवाल के जवाब में राजा से सवाल पूछा कि वह क्या चाहते हैं? इस पर राजा ने कहा कि यदि संन्यासी के पास सचमुच चमत्कारिक शक्तियाँ हैं, तो वह ऐसा कुछ कर दे कि राजा जिस वस्तु को हाथ लगाए वह सोने की बन जाए। संन्यासी ने कुछ मंत्र पढ़ें और फूँक मारकर कहा कि ऐसा ही होगा।

राजा ने अपनी शक्तियों की आजमाइश करनी चाही और राजमहल के एक खंभे को छू लिया। खंभा फौरन सोने का हो गया। राजा ने फिर एक-एककर पौंधों, गमलों, महल की दीवारों व अन्य वस्तुओं को हाथ लगाया और सब कुछ सोने का हो गया। राजा खुश हो गया। उसने संन्यासी को ढेर सारे उपहार देकर

राजमहल में ही निवास करने का अनुरोध किया। संन्यासी भी तैयार हो गया। रात के वक्त राजा के भोजन की व्यवस्था हुई। राजा चौकी पर बैठा और जैसे ही उसने भोजन की थाली में हाथ लगाया सारे पकवान सोने के हो गए। उसे संन्यासी से मिले अपने वरदान की याद आ गई। अब वह भूखे पेट अपने कक्ष में पहुँचा, जहाँ महारानी व उसकी बेटी उसका इंतजार कर रहे थे। उसने जैसे ही अपनी बेटी को गोद में उठाने के लिए छुआ वह भी सोने की हो गई। अब तक उसे एहसास हो चुका था कि उसने लालच में आकर आशीर्वाद के बदले अभिशाप माँग लिया था। उसने फौरन ही संन्यासी को बुलावा भेजा। संन्यासी ने सारी घटनाओं को सुनने के बाद राजा को दिया आशीर्वाद वापस ले लिया और सभी चीजें पहले जैसी हो गईं।

संन्यासी ने राजा से कहा कि ईश्वर ने हमें जितना दिया है, उसमें ही संतुष्ट रहना चाहिए। लालच व्यक्ति को अंधा बना देती है।

सीख: लालच करना बुरी बात है।

स्वाध्याय

1. सोता हुआ शेर – चूहे की बदमाशी – शेर का गुस्सा – चूहे पर दया – शेर का जाल में फँसना – चूहे का मदद करना – दोस्ती

2. एक लोमड़ी खाने की तलाश में जंगल में भटक रही थी। अचानक उसकी नजर एक डाल पर बैठे कौवे पर पड़ी। कौवे की चोंच में एक मुलायम व बड़ी रोटी थी ...

3. एक कौआ – प्यास से तड़पता – पानी का घड़ा दिखाई देना...

4. जल देवी उस लकड़हरे की ईमानदारी से खुश हो गईं। उन्होंने लोहे के साथ ही साथ सोने व चाँदी की कुल्हाड़ी उसे भेंट स्वरूप दे दी।